परिशिष्ट 16

[यीशु के दृष्टान्त]
अंजीर के पेड़ से शिक्षा और सदा तैयार रहो

मत्ती 24:32-35 में "अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त"

और लूका 12:35-40 में "सदा तैयार रहो का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में जागते रहने

के बारे में शिक्षा देते हैं

क. अंजीर का पेड़

पढ़ें मत्ती 24:32-35.

1. दृष्टान्त की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े वास्तविक तथ्य कौन से हैं?
ध्यान दें।

यह दृष्टान्त वास्तव में एक कहानी-चित्रण से अधिक एक *उदाहरणात्मक तुलना* है।

वृक्ष। यीशु ने अंजीर के पेड़ के बारे में जो कहा, वह शायद सदाबहार पेड़ों के अपवाद के साथ अन्य पेड़ों के बारे में भी कहा गया होगा (लूका 21:29)।

पत्ते बाहर निकलते हैं। जब एक वृक्ष की अपनी कलियों, टहनियों और नई पत्तियों को अंकुरित करना शुरू करता है, तो सब आप ही जान लेते हैं कि ग्रीष्मकाल निकट है।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 24:1-31 में पायी जाती है।

मत्ती 24 और 25 में आखिरी समय के लिए यीशु के शिक्षण शामिल हैं। इन दोनों अध्यायों का संदेश यह है कि मसीहियों को न्याय करने वाले और पुरस्कार देने वाले के रूप में मसीह के दूसरे आगमन के लिए जागते रहना चाहिए। इन अध्यायों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं और अंत समय में होने वाली घटनाओं दोनों का संदर्भ पाया जाता है। यह शिक्षण यरूशलेम पर आने वाले न्याय और दूसरे आगमन पर पूरी दुनिया के अंतिम न्याय से आपस में जुड़े हुए हैं। यरुशलेम के ऊपर आने वाला संकट एक ऐसे उदाहरण के रूप में कार्य करता है, जो कि अंत के समय के क्लेश का

चित्रण है।

मत्ती 24:1-3 । स्थिति । इस शिक्षण की स्थिति चेलों के दो प्रश्न हैं : "मंदिर का विनाश कब होगा?" और "मसीह के आने और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"

मत्ती 24:4-14 । पीड़ाओं का आरम्भ। सभी प्रकार के क्लेश, जैसे युद्ध, अकाल और भूकम्प, जगत के सभी देशों में सुसमाचार के प्रचार के साथ होंगे। यह सब अन्त से पहले होगा।

मत्ती 24:15-28 । यरूशलेम के क्लेश के कारण महान क्लेश । यीशु ने कहा कि जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणा वाली वस्तु को पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, तब यरूशलेम में क्लेश होगा। यह तब पूरा हुआ जब रोम की सेनाओं ने अपने सम्राट की मूर्तियों को ले जाकर मंदिर में खड़ा कर दिया और 70वीं ईसवीं में यरूशलेम शहर को भी नष्ट कर दिया (लूका 21:20)।

हालाँकि, यीशु ने कहा था कि यरूशलेम के विनाश के समय तुरन्त इस काल का अन्त न होगा। महान क्लेश के समय मानव जाति के पूरे इतिहास में असमान, महान संकट का समय होगा। वास्तविक मसीहियों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि झूठे मसीहा या झूठे भविष्यद्वक्ता अपनी झूठी शिक्षाओं और चमत्कारों को दिखाकर उन्हें भटका नहीं सकते हैं।

मत्ती 24:29-31. मसीह का दिखाई देना। मसीह का दूसरा आगमन अचानक और पूरी तरह से अप्रत्याशित होगा। यह एक छोर से दुसरे छोर तक एक बिजली के समान हर जगह दिखाई देगा। तुरही के बड़े शब्द के कारण यह हर जगह सुनाई देगा, और मसीह अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकठ्ठा करेंगे (यानी सभी सच्चे मसीहियों को)।

मत्ती 24:32-35. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त। जब चेले उन पराकाष्ठा की घटनाओं की श्रृंखला में "उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखें", तो वे जान जाएँगे कि यरूशलेम और मंदिर का विनाश निकट है। लेकिन "जब तक यह बातें (मसीह के पहले और दूसरे के बीच में) निश्चित रूप से पूरी न हो लें, तब तक पीढ़ी (यहूदी राष्ट्र के रूप में इस तरह के लोग) का अन्त नहीं होगा।"

मत्ती 24:36-44. हमेशा जागते और तैयार रहने की ज़रूरत। नूह के समय में बाढ़ अचानक और अनपेक्षित थी। मसीह का दूसरा आगमन भी इसी तरह अचानक और अनपेक्षित होगा। मसीह का आना पूरी तरह से अपूर्वानुमेय है। किसी को भी उस दिन या उस घड़ी का पता नहीं है! अपने दूसरे आगमन पर, मसीह निश्चित रूप से अनन्त संगति में हर व्यक्ति का स्वागत नहीं करेगा। मसीही हवा में प्रभु से मिलेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) और अपने दूसरे आगमन (2 थिस्सलुनीकियों 1:10) में चमत्कार करने के लिए स्वर्गदूतों द्वारा बादलों में छीन लिया जाएगा या बादलों में कैद कर लिया जाएगा। लेकिन अविश्वासियों को पीछे छोड़ दिया जाएगा (छोड़ दिया) (मत्ती 24:40-41)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन उनके इस शानदार और हर्षित स्वागत में कोई हिस्सा नहीं होगा, लेकिन बाद में उसी दिन स्वर्गदूत उन्हें मसीह के सिंहासन के सामने न्याय (नाश) करने के लिए प्रेरित करेंगे (मत्ती 25:31-33)।

मत्ती 24:45-51। विश्वासयोग्य और अविश्वस्योग्य दास का दृष्टान्त (लूका 12:41-48)। जागते और तैयार रहने का अर्थ है परमेश्वर के राज्य में विश्वासयोग्य और मेहनती सेवा।

मत्ती 25:1-13। दस कुँवारियों का दृष्टान्त। प्रतिदिन जागते और तैयार रहना प्रत्येक मसीही के लिए आवश्यक है, क्योंकि मसीह के दूसरे आगमन का समय पूरी तरह से अज्ञात है।

मत्ती 25:14-30। तोड़ों का दृष्टान्त। मसीह के दूसरे आगमन से पहले प्रत्येक मसीही को परमेश्वर द्वारा दिए गए तोड़ों और अवसरों का उपयोग करने में विश्वास और परिश्रम करना और अंतिम न्याय का दिन आवश्यक है।

मत्ती 25:31-46। भेड़ों ओर बकरियों का दृष्टान्त। यह मसीह के दूसरे आगमन पर सच्चे मसीहियों और गैर-मसीहियों के अंतिम न्याय का वर्णन करता है।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 24:32 में पाई जाती है।

नवोदित अंजीर के पेड़ के दृष्टान्त की भाषा शायद यशायाह 34:4 में निहित है, "आकाश की पूरी सेना गल जाएगी,आकाश को खर्रे की तरह लपेटकर रख दिया जाएगा। जैसे अंगूर की बेल के पत्ते और अंजीर के फल सूखकर गिर जाते हैं, वैसे ही आकाश की सेना मुरझाकर गिर जाएगी।" प्रकृति के दायरे में आक्षेप (तुलना करें इब्रानियों 12: 26-27) की तुलना अंजीर के पेड़ से गिरने वाले पत्तों से की जाती है। यीशु ने अपने दूसरे आगमन से पहले आकाश की शक्तियों के हिलने के रूप में महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बात की थी। अंजीर का पेड़ एक प्रतीक हो सकता है जो एक आंधी से हिल जाता है। अब वह उसी पेड़ के बारे में एक दृष्टांत से शिक्षा देता है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग को मत्ती 24:33-35 में दिया गया है।

मत्ती 23:37-24:3 में, यीशु ने मंदिर सहित यरूशलेम के विनाश के बारे में बताया। उनके चेलों ने उनसे दो सवाल पूछे। यीशु के चेलों का पहला सवाल था, "यह कब होगा?" और दूसरा सवाल था, "तेरे आने का और जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा?" "और" के लिए ग्रीक शब्द "kai" है और इसका अर्थ है "यह कहना चाहते हैं" (अर्थात्) (कहा जाता है: kai explicative)। यह तीसरा प्रश्न नहीं है, लेकिन यह बताता है कि "यीशु मसीह का आना" "दुनिया का अंत" होगा! मसीह के दूसरे आगमन के बाद इस पृथ्वी पर अधिक घटनाएँ नहीं होंगी[28]। नवोदित अंजीर के पेड़ के दृष्टांत की व्याख्या सीधे इन दो प्रश्नों से सम्बन्धित है: स्पष्टीकरण का पहला भाग (मत्ती 24:33) पहले प्रश्न से और स्पष्टीकरण का दूसरा भाग (मत्ती 24: 34-35) दूसरे प्रश्न से सम्बन्धित है।

चेलों का पहला प्रश्न है, "यह कब होगा?" इस सवाल का यीशु[29] यह जवाब देते हैं, "जब तुम इन सब बातों को देखो, वह निकट है, वरन् द्वार पर है" (मत्ती 24:33)। यीशु अपने चेलों से बात कर रहे थे। शब्द "जब तुम (बहुवचन, चेले) इन सब बातों को देखो", यीशु द्वारा बताए गयी विभिन्न भविष्यद्वाणियों की पूर्ति का उल्लेख करता है, जिन घटनाओं के साक्षी अभी तक उसके चेले रहे हैं! यीशु ने मंदिर सहित यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी की। उसने भविष्यद्वाणी की थी कि मंदिर के पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा; जो ढाया न जाएगा। वे यह सब अपनी आँखों से देखेंगे: झूठे मसीह (मसीहा) और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा, जगह-जगह अकाल और भूकम्प आदि की चर्चा सुनोगे। यीशु ने इन सभी घटनाओं को "पीड़ाओं का आरम्भ" कहा (मत्ती 24:4-8)।

इस तरह की घटनाएँ 70 ईसवीं में यरूशलेम के पतन से पहले ओर उसके सम्बन्ध में पहले हो हो चुकी है। यहाँ तक कि "उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को मंदिर के पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो" (मत्ती 24:15-20) की भविष्यद्वाणी भी अपने ही

[28] उदाहरण के लिए सहस्राब्दी साम्राज्य (औषध विज्ञान का)।

[29] यीशु ने 30 A.D में ये शब्द बोले थे।

समय में पूरी हो चुकी है। 70 ईसवीं में रोम की सेनाओं को उनके स्थानों पर उनके राजा की मूर्ति के चित्रों को ले जाने, मंदिर में खड़े रहने और मंदिर और यरूशलेम के विनाश का उल्लेख किया गया है (लूका 21:20)। इसलिए, मत्ती 24:33 का यह अर्थ निकालना स्वभाविक है कि जब मसीह के चेले इन सब बातों को होते हुए देखें, तो उन्हें पता होना चाहिए कि "यरूशलेम और उसके मंदिर का विनाश", बहुत निकट है!

चेलों का दूसरा प्रश्न है, "तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?" यीशु ने इस प्रश्न का जवाब दिया, "जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।" शब्द "चिन्ह" (ग्रीक: sémaion) यहाँ एक ऐसी घटना को दर्शाता है जो सृष्टि में या इतिहास में घटित होती है, लेकिन जो अपने आप को दूर करने की ओर इशारा करती है।[30] चेलों ने पूछा कि इतिहास की कौन सी घटनाएँ मसीह के दूसरे आगमन और जगत के अन्त का चिन्ह होगी? यरूशलेम के विनाश और विशेष रूप से मंदिर के विनाश के बारे में चेलों ने यीशु द्वारा कहे गए शब्दों की व्याख्या की थी जिसका अर्थ है "जगत का अन्त।" उनका ऐसा मानना आंशिक रूप से गलत था:

यीशु ने कहा कि एक तरफ यरूशलेम और उसके मंदिर के बीच की लंबी अवधि और दूसरी तरफ आने वाले मसीह के दूसरे युग के अंत के बीच हस्तक्षेप होगा।

यीशु ने समझाया कि उसके पहले आगमन (यरुशलेम और मंदिर को नष्ट करने) और उसके दूसरे आगमन (इस वर्तमान दुनिया का अंत होगा) के बीच लंबी अवधि के दौरान, मसीह के साथ मसीहियों के संबंध होने के कारण उन्हें सताया और मार डाला जाएगा, और सभी देश उनसे ईर्ष्या करेंगे। कई झूठे भविष्यवक्ता (मसीही धर्म से भी और अन्यजाति और राजनीतिक दलों से) कई उठ खड़े होंगे और धोखा देंगे। कई नाम के मसीही विश्वास से दूर हो जाएँगे, कलीसिया छोड़ देंगे और यहां तक कि एक-दूसरे के साथ विश्वासघात भी करेंगे। दुष्टता बढ़ेगी और प्रेम ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन अंत आने से पहले, राज्य का सुसमाचार (अर्थात्, यीशु मसीह का राज्य) दुनिया के हर देश में सुनाया जाएगा (मत्ती 24:14)!

यह स्पष्ट है कि ये घटनाएँ जो दूसरे आगमन तक होती हैं, उन्हें मसीह के चेलों के छोटे समूह ने नहीं देखा। शब्द, "जब तुम (बारह शिष्य) इन सब बातों को होते हुए देखो" (मत्ती 24:33), केवल उन बातों का उल्लेख करते हैं जिन्हें यीशु मसीह के चेलों द्वारा देखा गया। और शब्द, "जब तक ये सब बातें पूरी नहीं हो जाती" उन बातों का उल्लेख करते हैं जो मसीह के दूसरे आगमन तक सदियों तक होती रहेंगी! वे समान बातों का संदर्भ नहीं देते हैं!

मत्ती 24:35 इस वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी (उत्पत्ति 1 की सृष्टि) के अंत की ओर इशारा करता है। मत्ती 24:36 - 25:46 भी मसीह के दूसरे आगमन के आसपास की घटनाओं को संदर्भित करता है। इसलिए, संदर्भ से पता चलता है कि मत्ती 24:34 में "ये सभी बातें" शब्द यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच सदियों के दौरान होने वाली बातों के साथ-साथ दूसरे आगमन के समय में भी होगी!

शब्द "इस पीढ़ी" को समकालीनों के एक समूह तक सीमित करने की आवश्यकता नहीं है, न तो यीशु के समय में, न

---

[30] यूहन्ना के सुसमाचार में चिन्ह: पानी का दाखरस में बदलना एक चिन्ह था कि यीशु अनन्त जीवन का स्रोत है (यूहन्ना 2:11; 4:14)। बीमारों की चंगाई यह चिन्ह थी कि यीशु प्रभु का सेवक है (यूहन्ना 6:2; मत्ती 8:17)। 5000 लोगों को आश्चर्यकर्म के द्वारा भोजन इस बात का चिन्ह था कि यीशु जीवन की रोटी है (यूहन्ना 6: 14,26)। जन्म के अंधे व्यक्ति को चंगाई मिलनाइस बात का चिन्ह थी कि यीशु दुनिया का प्रकाश है (यूहन्ना 9:16)। लाज़र का पुनरुत्थान इस बात का चिन्ह था कि यीशु पुनरुत्थान और जीवन है (यूहन्ना 11:47)। बंद दरवाजों के माध्यम से चलना इस बात का संकेत था कि यीशु के पास "दाऊद की कुंजी" है और वह उन दरवाजों को बंद कर देता है जिन्हें कोई नहीं खोल सकता है और ऐसे दरवाजे खोलता है जिन्हें कोई बंद नहीं कर सकता है "(प्रकाशितवाक्य 3: 7-8) (तुलना करें यूहन्ना 20:30-31)।

वर्तमान इक्कीसवीं सदी में! यह एक ऐसे अर्थ का उल्लेख कर सकता है जो इससे बढ़कर है और इसका अर्थ है "इस तरह के लोग", उदाहरण के लिए, "यहूदी, किसी भी समय या किसी भी उम्र में" (व्यवस्थाविवरण 32:5,20; भजन संहिता 12:7; 78:8; ; प्रेरितों 2:40; फिलिप्पियों 2:15; इब्रानियों 3:10)। इसलिए, मत्ती 24:34 में "पीढ़ी" शब्द का यह अर्थ भी हो सकता है। यीशु ने घोषणा की कि यहूदी राष्ट्र तब तक नहीं टलेगा जब तक कि दूसरे आगमन तक सब बातें पूरी न हो जायें (यिर्मयाह 31:36)! इस्राएल ने, अपने सभी विशेषाधिकारों के बावजूद, अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया था। इसलिए यह स्वभाविक लग सकता है कि उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मिटा दिया जाएगा। हालाँकि, यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि दूसरे आगमन तक यहूदी एक राष्ट्र के रूप में मौजूद रहेंगे।

प्रेरित पौलुस ने भी भविष्यद्वाणी की थी कि हर युग में इस्राएल राष्ट्र के एक चुनावी हिस्से (अवशेष) को बचाया जाएगा, जैसे कि अन्यजातियों से चुना गया हिस्सा बचाया जाएगा (रोमियों 11:1-2,25-26)। हालाँकि यीशु के चेले इन सब बातों को नहीं देखते, फिर भी ये सारी बातें ज़रूर होंगी! हालाँकि वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी टलने जा रहे हैं, यीशु के शब्द कभी भी नहीं टलेंगे (मत्ती 24:35)! यीशु के वचन वह आधार हैं जिस पर परमेश्वर की सन्तानें अपना विश्वास स्थापित करते हैं!

निष्कर्ष: मत्ती 24:33 मत्ती 24:3 अ में यीशु के चेलों द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब है। और मत्ती 24:34, मत्ती 24:3 ब का जवाब है।

मत्ती और मरकुस की व्याख्या या अनुप्रयोग यूहन्ना से भिन्न है। जबकि मत्ती और मरकुस अंत समय में पूरी दुनिया के पतन के एक प्रकार के रूप में यरूशलेम के पतन की बात करते हैं, लूका अन्त में यरूशलेम के पतन (लूका 21:20-24) और दुनिया के पतन के बीच अंतर करता है (लूका 21: 25-28)। जबकि मत्ती और मरकुस में "महान क्लेश" (मत्ती 24:21,29; मरकुस 13:19,24) शब्दों का दोहरा संदर्भ है अर्थात् यरूशलेम के पतन पर क्या होगा (मत्ती 24:15-20 ; मरकुस 13:14-18) और मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले क्या होगा (मत्ती 24: 21-31; मरकुस 13:19-27), लूका में वे केवल यरूशलेम के पतन पर क्या होगा इसका उल्लेख किया गया है (लूका 21:23)!

इसलिए, लूका में, वाक्य "जब तुम इन सब बातों को होते हुए देखो" (लूका 21:31) केवल उन घटनाओं को संदर्भित करता है जो यीशु के दूसरे आगमन के संबंध में होगा जैसा कि लूका 21:25-28 में लिखा हुआ है और जो केवल उस समय रहने वाले लोग देख सकेंगे। लूका के अनुसार, जब ये सब बातें होंगी, तो अंत समय में रहने वाले मसीही जान लेंगे कि "परमेश्वर का राज्य निकट है", अर्थात्, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर का राज्य अपनी अंतिम महिमा और वास्तविकता बनने की ओर है। फिर भी, तीनों सुसमाचार कहते हैं कि "यह पीढ़ी", यानी "एक राष्ट्र के रूप में यहूदी लोग" तब तक अस्तित्व में नहीं आएंगे जब तक कि ये बातें पूरी न हो जायें।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें। यह दृष्टान्त वास्तव में एक *कहानी-चित्रण* से अधिक एक उदाहरणात्मक तुलना है जिसमें कुछ विवरण अप्रासंगिक हो सकते हैं।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 24:32-35 में "अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त" और लूका 12:35-40 में सदा तैयार रहो का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में जागते रहने" के बारे में शिक्षा देते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मसीह की भविष्यवाणियां उन बातों के बारे में हैं जो उसके पहले और दूसरे आगमन के बीच की अवधि में घटित होंगी और निश्चित रूप से मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए जागते और तैयार रहना चाहिए!"

जागते रहना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों का मानना है कि मसीह की भविष्यवाणियां उसके दूसरे आगमन के संबंध में हैं और इसलिए वह दूसरे आगमन के लिए सतर्क और तैयार हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

अध्याय 45 देखें

---

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।

अध्याय 45 देखें

ख. सदा तैयार रहने वाले दास

पढ़ें लूका 12:35-40

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

सेवा के लिए तैयार रहें। मूल शब्द का शाब्दिक अर्थ है, "तुम्हारी कमर बंधी रहे"। सामान्य लोगों के साथ-साथ दासों ने भी लंबे समय तक लहराने वाले वस्त्र पहने। जब वे भागते या काम करते थे, तो उसे वे एक कमरबंध से बांध दिया करते थे, ताकि उनके कपड़े कामों में बाधा न डालें (प्रेरितों के काम 7:58)। प्रतीकात्मक रूप से, इस चित्र का अर्थ है, "सेवा के लिए तैयार रहना"।

तुम्हारे दिए जलते रहें। जब उनका स्वामी दूर एक विवाह में भाग ले रहा था, तब दासों को पता नहीं था कि वह कब

लौटेगा। विवाह की दावत में कई दिन या पूरे हफ्ते लग सकते थे (न्यायियों 14:17)। इस कहानी में, दासों ने उससे उस रात लौटने की उम्मीद की। इसलिए, जब वे लौटा तो अपने स्वामी की सेवा के लिए तैयार रहने के लिए वे जागते रहे। अपने दीपक जलाने के लिए भी तैयार रहने की आवश्यकता की ओर इशारा किया।

रात्रि का दूसरा और तीसरा पहर। यहूदियों ने रात को तीन पहर में विभाजित किया (न्यायियों 7:19)। रोमियों ने रात को चार पहरों में विभाजित किया (मत्ती 14:25; मरकुस 13:35)। लूका ने संभवत: रोमियों के पहर के चार विभाजन का पालन किया, क्योंकि वह आमतौर पर मरकुस और मत्ती के सुसमाचारों का अनुसरण करता है (लूका 12:38)।[31]

स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा करेगा। यह बहुत असामान्य है! सामान्य जीवन में, एक स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा नहीं करेगा, लेकिन दासों को हमेशा अपने स्वामी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। दो बार, "यह उनके लिए अच्छा होगा" कहकर, कहानी ऐसे दासों को दो बार आशीर्वाद देती है (लूका 12: 37-38)! साथ ही यह कथन अद्भुत है!

घर का स्वामी और चोर। अगर स्वामी को चोर के आने का पता हो तो वह चोर को अपने घर में नहीं घुसने देता। केवल घर के वह स्वामी, जो आने वाले चोरों के लिए तैयार नहीं हैं, कोई तैयारी नहीं करेंगे।

---

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:13-34 में पायी जाती है।

यीशु ने अमीर मूर्ख के दृष्टांत को बताया था। इसके बाद उसने जीवन की भौतिक आवश्यकताओं के बारे में चिंता न करने की चेतावनी दी, क्योंकि परमेश्वर पिता अपने लोगों की पृथ्वी पर देखभाल करता है और उन्हें अपना राज्य देने में प्रसन्न होता है! इसलिए यीशु उनसे विनती करता है कि वे अपनी भौतिक संपत्ति का उपयोग पृथ्वी पर परमेश्वर राज्य को आगे बढ़ाने के लिए करें, और सांसारिक संपत्ति पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय स्वर्गीय खजाने पर अपने मन को लगायें। सांसारिक खजाने का उपयोग तब तक किया जा सकता है जब तक कि वे समाप्त न हो जाए, या इसे चुराया या कीड़े द्वारा नष्ट न किया जाये, लेकिन स्वर्गीय खजाने को कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता है, न ही इसे चुराया या नष्ट नहीं किया जा सकता है! यीशु ने सिखाया, "जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी होगा" (मत्ती 6:21)!
इस बिंदु पर, यीशु ने चौकस दासों के दृष्टांत को बताया। यह दृष्टान्त मूर्ख धनवान के दृष्टान्त के ठीक विपरीत है। मूर्ख धनवान ने अपना हृदय और मन पृथ्वी के नाशवान खजाने पर लगाया हुआ था, लेकिन चौकस सेवकों ने स्वर्ग के अनन्त खजाने पर अपना हृदय और मन लगाया हुआ था!

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 12:35-38 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 12:39-40 में दिया गया है।

पद 39 एक दृष्टांत या व्याख्या के भाग में एक दृष्टांत है। यद्यपि घर के स्वामी को पता नहीं है कि चोर कब आने वाला है,

---

[31] मरकुस रचित सुसमाचार को रोम में प्रेरित पतरस के सहकर्मी मरकुस (1 पतरस 5:13) ने लिखा था और रोमियों को निर्देशित किया गया था। मत्ती (63-66 A.D.) और लूका (60-61 A.D.) ने मरकुस (44-46 A.D.) पर अपने सुसमाचारों को आधारित किया।

उसे अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए। इसी तरह, यीशु के चेलों को उसके दूसरे आगमन के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए! यीशु मसीह उस घड़ी आएगा जिसकी कोई[5] भी उम्मीद नहीं करेगा!

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं*?*
ध्यान दें।

यीशु किसी विशेष अर्थ का विवरण नहीं देते हैं। इसलिए विवरण को संदर्भ से समझने की आवश्यकता है।

तुम्हारी कमर बंधी रहे, ओर तुम्हारे दिए जलते रहें। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि यह सीधे केंद्र बिंदु या दृष्टांत के मुख्य संदेश की ओर इशारा करता है, अर्थात् यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार तैयार रहना।

दूसरा या तीसरा पहर। यीशु इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। क्योंकि विवाह अभी भी रात की पहली घड़ी के दौरान चल रही थी, सेवकों ने उससे उसके बाद लौटने की उम्मीद की, लेकिन वास्तव में कब, कोई नहीं जानता था। यह अब तक प्रासंगिक है कि पृथ्वी पर कोई भी उस समय को नहीं जानता जब यीशु मसीह सभी लोगों का न्याय करने के लिए इस पृथ्वी पर वापस आएगा (मत्ती 24:36; प्रेरितों के काम 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-3)!

स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा करेगा। यह प्रासंगिक है! यद्यपि साधारण जीवन में, एक स्वामी अपने दासों का कभी इंतजार नहीं करेगा, यीशु मसीह ने न केवल पृथ्वी पर आने के दौरान ऐसा किया था (मरकुस 10:45; लूका 22:27; यूहन्ना 13:1-15), लेकिन वह ऐसा पृथ्वी पर अपने दूसरे आगमन के समय में भी करेगा! एक तरीके से जो उसकी महिमा और गौरव के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, यीशु मसीह उन लोगों की सेवा करेगा जो विश्वासयोग्य रहे हैं। उदाहरण के लिए, वह प्रत्येक सच्चे मसीही जन की सच्ची आत्माओं को अपने स्वयं के समान बनाने के लिए उनके जीवन में उद्धार के अपने काम को पूरा करेगा (1 यूहन्ना 3:2; तुलना करें 2 पतरस 1:4) और उनके तुच्छ शरीर उसकी महिमान्वित पुनर्जीवित देह के सामान होंगे (फिलिप्पियों 3:21)। और वह उन्हें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में ले जाएगा, जहाँ वे उसकी उपस्थिति में उसके साथ हमेशा के लिए रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:1-3)!

मालिक चोर के आने के लिए तैयार रहेगा। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यह सीधे इस दृष्टांत के अनुप्रयोग की ओर इशारा करता है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 12:35-40 में "सदा तैयार रहो का दृष्टान्त" परमेश्वर के राज्य में जागते रहो के बारे में बताते हैं

दृष्टान्त का मुख्य संदेश दस कुँवारियों के दृष्टान्त के समान है। "मसीहियों को सदैव यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए सतर्क, जागते और तैयार रहना चाहिए।"

जागते और तैयार रहना परमेश्वर के राज्य की दो मूलभूत विशेषताएं हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग लगातार अपने स्वामी, यीशु मसीह को स्वीकार और उनकी सेवा करने के लिए तैयार रहेंगे।
